"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 03, Issue: 05, Sept. – Oct. 2016 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (IIFS) - 0.776

इंण्टरनेट युग में ग्रथालयों की भूमिका एवं कार्य

बृज भूषण मिश्रा
लाइब्रेरियन
गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान झूसी इलाहाबाद उत्तर प्रदेश भारत

प्रवीन कुमार पाण्डेय
अतिथि प्रवक्ता
बाबू जय शंकर गया प्रसाद पी0जी0 कालेज सुमेरपुर उन्नाव उत्तर प्रदेश भारत

रवी शंकर केसरवानी
विद्यार्थी
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय इलाहाबाद उत्तर प्रदेश भारत

सार

इण्टरनेट के उद्भव एवं विकास ने पुस्तक व्यवसाय की कार्य प्रणाली को बदल दिया है । पाठ भी मुद्रित पुस्तकों की तुलना में इलेक्ट्रानिक पुस्तकों को अधक पसंद कर रहे है । पुस्तकालय भी निरन्तर अपनी पाठ्य –सामग्रियों में मुख्य रूप से इलेक्ट्रानिक प्रलेंखो की संख्या में निरन्तर वृद्धि कर रहे है । इण्टरनेट आज के समय में मनुष्य के लिये रोटी, कपड़ा और मकान जैसी महत्वपूर्ण वस्तुओ में सम्मिलित हो चुका है जिससे किसी भी समय और कहीं पर भी किसी भी प्रकार की सूचना प्राप्त की जा सकती है ।

परिचय –

आधुनिक समाज में सभी कियाकलाप सूचना पर आधारित है । इस तरह जो भी विकास की नींव रखी जाती है वह सूचना पर आधारित रहती है । इस प्रकार समाज में अनेंक प्रकार की आवश्यकता पड़ती रहती है , इसलिये आधुनिक समाज को सूचना समाज कहा जाता है तथा इस प्रकार सूचना नवीन से नवीन क्षेत्रीय राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय सूचना किस प्रकार तात्कालिक प्रभाव में विशिष्ट उपयोक्ता के पास पहुंचाई जाये इसके लिये हर प्रयास किया जाता है जिससे कि समाज का कल्याण हो सके । सूचना प्राप्त करने के लिये कई प्रकार के उपाय किये जाते है जिससे कि ग्रन्थालयों को मशीनीकरण तथा कम्प्यूटरीकरण कर उन्हें आधुनिक रूप दिया जा रहा है जिससे कि सभी प्रकार के कार्यसेवाओ देश काल के अन्त सार दक्षता से प्राप्त कर सके इस प्रकार के सूचना समाज को आधुनिक रूप से काफी बल दिया जा रहा है जिससे समाज के साथ राष्ट्र का भी कल्याण हो सके इसप्रकार आधुनिक समय से जो भी पुस्तकालय का कार्य एवं सुचारू रूप से इलेक्ट्रानिक रूप प्रदान किया जा रहा है इस प्रकार से सूचना को इमेल तथा फैक्स टैलीटैक्स के माध्यम सूचना की प्राथमिक स्तर सूचना को सूमाज को प्रदान की जाती तथा आज का समाज वर्तमान काफी हद तक जागरूक हो चुका है जिससे कि सूचना के बिना किसी भी देश तथा किसी कार्य की सफलता की कल्पना नही की जा सकती है इस प्रकार आधुनिक समय में सूचना कैसे समाज तक पहुॅचाई जाये इसका उपाय

http://www.ksijmr.com

किया जा रहा है वर्तमान में समाज विज्ञान और प्रोद्योगिकी के विकास के साथ तीव्र गति से प्रगति की ओर बढ रहा है ।जिससे कि अनुसंसाधन और विकास से सम्बन्धित सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान तक क्षण मात्र में पहुच जाती है पूर्व में सूचना और प्रौद्योगिकी के उन्नत न होने से सूचना समाज तथा शोधकर्ता का शोध पूरा नही हो पाता था जिसके कारण सूचना का अभाव बना हुआ था इस प्रकार विषय विशेषज्ञ या शोधकर्ता अपने विषय क्षेत्र मे हो रहे है अनुसंसाधन क्रिया कलापों के सम्बन्ध में नवीन सूचना प्राप्त करना चाहता है और यह जानकारी उसे सूचना के प्राथमिक स्त्रोतो के द्वारा ही उपलब्ध हो पाती है इस प्रकार यह सभी प्रकार के कार्य कम्प्यूटर और सूचना के माध्यम से प्राप्त हो जाती है वर्तमान परिवर्तित समाज अनेको प्रकार की संगठन संस्थायें एवं संघ और व्यक्ति एक संदेश वाहन के साधनो द्वारा परस्पर जुडे रहते है इस प्रकार आधुनिक समाज को सूचना समाज की संज्ञा दी गयी है इस प्रकार से नवीनतम सूचनाओं का ज्ञान की राष्ट्रीय संपदा के विकास के प्रमुख अंग मानते हुये विज्ञान कृषि उद्योग तकनीकि आदि क्षेत्रो में सूचना केन्द्रो की स्थापना की जा रही है तथा ग्रन्थालय स्वरूप में तेजी से विकास हो रहा है ।

परिवर्तन के कारक तत्व – आधुनिक समाज में मानव जीवन के विभिन्न पक्षो में जो परिवर्तन आया है उसके कारक निम्नलिखित है ।

1. **शासन प्रसासन –** नियोजन मे परिवर्तन नीति पालन तथा व्यवस्थापन आदि ।
2. **व्यवसाय एवं वाणिज्य** – आयात और निर्यात अन्तर्राष्टीय व्यपार बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रभाव आदि सामाजिक जनसंख्या का दबाव बढता हुआ नगरीकरण ग्रामीण विकास की गतिशीलता समूह आदि ।
3. **आर्थिक –** समाज की व्यवसायिक संरचना आय मूल मुद्रा स्फीति विकास की गतिशीलता सूक्ष्म तथा वृद्ध स्तरों पर आर्थिक विकास आदि ।
4. **राजनैतिक** – राजनैतिक परिवर्तन में प्रभावित राजनैतिक ढॉचा राजनेतिक दलो की बहुआयामी गतिविधियों राज्य विधान सभाओं के विधायको और सांसदो की भूमि का सत्ता का ढाचा आदि ।
5. **शैक्षणिक** – शैक्षणिक परिवर्तनो से प्रभावित अध्ययन एवं अध्यापन प्रक्रिया अध्ययन अध्यापन सामग्री आदि ।
6. **अनुसंधान तथा विकास** – प्रौद्योगिकी स्थानान्तरण सूचनाओ का प्रसारण विस्तार समाज के मानविकी के क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास आदि ।

उपरोक्त कारक तत्व मानव के जीवन समाज में तीव्रता से परिवर्तन ला रहे है जिसके फलस्वरूप आधुनिक पुस्तकालयों और सूचना केन्द्रो की भूमिका में भी परिवर्तन हो रहे है ।

पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र की परिवर्तित भूमिका – प्रारम्भ में जहॉ मुद्रित अध्ययन सामग्री प्रारम्भ अन्तर्गत ग्रन्थो और पत्र पत्रिकाओं का संग्रहण किया जाता था जबकि अब वहॉ सामाजिक प्रशासन सम्मेलन कार्यवाहियॉ शोध प्रबंन्ध मानव तकनीकि रिपोर्ट श्रव्य दृश्य सामग्री माइकोफार्म मशीन रिडेबल फार्म मैगनेटिक टेप्स सी0डी0 रोम आदि स्वरूपों में सूचना का संग्रहण किया जा रहा है इस प्रकार सूचना सामग्री का स्वरूप परिवर्तित हो रहा है तथा उपयोग कर्ताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन होता आ रहा है । इस प्रकार दूरसंचार माध्यमों के विकास में कम्प्यूटर पर आधारित पद्धतियों के विकास में अपनी मुख्य भूमिका निभाई है पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र भी कम्प्यूटर ओर संचार साधनो से अछूते नही रहे तथा संचार के माध्यम से सूचना की पुनः प्राप्ति त्वरित गति से संभव हो गयी है इस प्रकार सभी क्षेत्रो मे सूचना की महत्ता बढने के कारण सूचना के प्रसारण एवं उपलब्धता की आवश्यकता के फलस्वरूप नेटवकिंग की अवधारणा का विकास हुआ है आज वर्तमान समय में सूचना समाज में विशिष्ट उपयोग कर्ताओ का सूचना के संचार के

माध्यम से कल्याण हो रहा है सूचना के बिना किसी भी वस्तु का कल्याण होना असंम्भव है नेटवर्किंग का उपयोग सूचना के विनिमय और संसाधन सहभागिता के लिये किया जा रहा है इस प्रकार पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्रो की भूमिका से परिवर्तन हो रहा है स्तर बतलाया गया है कि ग्रन्थालय एवं सूचना केन्द्र अपने आधुनिक परिवर्तित स्वरूप में भी आधुनिक सूचना सेंवाओं की व्यवस्था कर अपने उपयोग कर्ताओं को मॉग को आवश्यकता अनुसार पूरा कर रहे है इस प्रकार आधुनिक समय को सूचना समाज कहा जाता है क्योंकि इसके बिना किसी भी क्षेत्र की कल्पना नही की जा सकती इसलिये कम्प्यूटर तथा ई मेल फैक्स के माध्यम से तत्काल सूचना प्राप्त होने पर क्षेत्र में तीव्र गति से विकास हुआ है ।

मानव जिस समाज में रहता है वह हमेशा से परिवर्तित होता आ रहा है क्योंकि आज के वर्तमान में समय समय पर समाज में नवीन प्रलचन प्रारम्भ होते जा रहे है वर्तमान समय का समाज भी अनेक परिवर्तनो के बाद हमारे समक्ष होते आया है इस प्रकार का युग है सूचना के किसी भी क्षेत्र में इलेक्ट्रानिक माध्यमो के द्वारा ही सूचना उपलब्ध करायी जाती है तथा सूचना उपयोग एवं सेवाओं की बढती हुई विशाल संख्या ने यह प्रमाणित कर दिया है कि आज का समाज सूचना का समाज है आज हम सभी लोग सूचना समाज के अन्तर्गत जीवन यापन कर रहे है ।

सूचना समाज की विशेषतायें – सूचना का उपयोग एक आर्थिक संसाधन के रूप मे किया जा रहा है इसलिये सूचना के बिना कल्पना नहीं की जा सकती है ।

2. उपयोगताओं को वांछित सूचना की त्वरित एवं उपयुक्त आपूर्ति होती है

3. सूचना सेवायें प्रदान करने की संरचना एवं दूरसंचार पर आधारित होती है ।

4. उच्च स्तर की इलेक्ट्रानिक तथा कम्प्यूटर डेटा संचारण तथा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे रोजगार के अवसर प्राप्त होते रहते है

5. सामान्य जनता से सूचना के उपयोग के दर्शन किये जाते है ।

6.औद्योगिकी अर्थव्यवस्था सूचना अर्थव्यवस्था से बदल जाती है अर्थात जिस प्रकार औद्योगिकी अर्थव्यवस्था में पूँजी एक प्रमुख संसाधन सहभागी होती है ठीक उसी प्रकार सूचना अर्थव्यवस्था में सूचना ही प्रमुख संसाधन है स्पष्ट रूप से कह सकते है कि सूचना के व्यवहार में अनेक प्रकार की प्रौद्योगिकी के उपयोग किये जाने के कारण आज का समाज सूचना समाज की संज्ञा दी जाती है ।

सूचना समाज का प्रभाव –

1. **शिक्षा पर प्रभाव** – इस प्रकार सूचना समाज के आगमन के कारण शैक्षणिक प्रक्रियाओं के नवीन से नवीन आयामों का प्रारम्भ हो रहा है इस प्रकार सीखने एवं शिक्षण के आधुनिक उपकरण है तथा इसलिये किसी भी व्यक्ति को उसका वांछित लाभ प्राप्त करने एवं सीखने मे सहायक सिद्ध हो रहा है इस प्रकार शिक्षण को देखते हुये आज वर्तमान समय में सभी कालेजों में वर्चुवल क्लास रूम में छात्र छात्राओं की अध्ययन प्रक्रिया को सरल एवं सुयोग्य स्थापित कर दिया हे तथा साथ ही साथ घरों मे स्थापित कर दिया है इस प्रकार आज का युग सूचना का युग कहा जाता है ।

2. **अनुसंसाधन एवं विकास पर प्रभाव –** अनुसंसाधन के क्षेत्र मे सूचना एवं प्रौद्योगिकी का विशेष योगदान है सूचना एवं प्रौद्योगिकी के उदभव से बहुत बड़े बड़े शोधकार्य आसानी से पूरे हो जाते है शोध के दौरान आंकणो को एकत्रित करना डिजिटल प्रश्नावली के माध्यम से आंकडा एकत्र करना सम्पूर्ण विश्व से आनलाइन डिजिटल प्रश्नावली का प्रयोग करना प्राप्त आंकडों का विश्लेषण करना तथा शोधरिपोर्ट लिखना इत्यादि ।
3. **सरकार पर प्रभाव** – विश्व के लगभग सभी देशो की सरकारें अपने सभी कार्यकलापों पर सक्रिय डेटा संग्रहित व्यवस्थित एवं प्रसारित करती है जिससे कि सरकारी योजनाओं की विशाल मात्रा मे सूचना संसाधन के रूप मे प्राप्त होती रहती है इस प्रकार से आज तक सूचना प्रौद्योगिकी सरकारी क्रियाकलापों अत्यन्त व्यापक रूप से उपयोग मे लायी जा सकती है सूचना प्राचीन समय में काफी लोगों तक देर से पहुॅचने के कारण सूचना पुरानी पड़ जाती थी जिससे कि काफी दिक्कत का सामना करना पड़ता था इस प्रकार से आधुनिक समय में सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से सूचना क्षण भर मे उपलब्ध हो जाती है ।
4. **व्यापार एवं उद्योग धंधो पर प्रभाव** – आज के वर्तमान समय में व्यापारिक एवं औद्योगिकी इकाइयॉ अपना आधुनीकरण करने हेतु विभिन्न नवीनतम उपकरणो नवीन से नवीन प्रौद्योगिकी के उपयोग को काफी हद तक प्रोत्साहन प्रदान करती है इसलिये व्यापार एवं उद्योग के लिये सूचना की आवश्यकता रहती है तथा यह सूचना प्रौद्योगिकी के कारण प्राप्त हो जाती है तथा यह सामान्य व्यापार से विशिष्ट व्यापार तक सूचना को प्रौद्योगिकी के कारण प्राप्त किया जा सकता है क्योकि आज का समय सूचना समाज का युग है इसलिये बिना सूचना के किसी भी प्रगति की कल्पना तक नही की जा सकती है ये दोनो ऐसे क्षेत्र है कि जिन्होने प्रबंन्ध सूचना प्रणालियों का उपयोग सूचना उपलब्ध कराने में किया जा रहा था इस प्रकार व्यापार उद्योग धंधे भी सूचना समाज के प्रभाव से अछूते नही रह जाते है ।
5. **मनोंरंजन एवं संस्कृति पर प्रभाव –** व्यक्ति अपने आमोद प्रमोद अनेक एवं मनोरंजन हेतु आधुनिक समय मे कई प्रकार के कम्प्यूटर गेम जैसे वीडियो गेम्स सैकड़ो चायनल टेलीवीजन वीडियों डिस्क एवं वीडियों कैसिट रिकार्डस आदि का उपयोग करते रहते है पाश्चात्य देश प्रसारण एवं टेलीवीजन नेटवर्क के माध्यम से मनोरंजन के दृश्य एवं प्रोग्राम विश्व को प्रसारित करते रहते है जोकि विश्व के प्रत्येक स्थान पर क्षण भर मे सूचना प्राप्त हो जाती है इस तरह से ईमेल व फैक्स के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को अपने कार्यो से जुड़ा सूचना नेटवर्क के माध्यम से प्राप्त किया जाता है इस प्रकार से सूचना को दूसरे स्थान पर कम्प्यूटर के माध्यम से प्राप्त किया जाता है ।
6. **व्यक्ति के दैनिक जीवन पर प्रभाव** – एक साधारण व्यक्ति भी आज अपने दिन प्रतिदिन के कार्यो में सूचना की आवश्यकता का अनुभव करता रहता है इस प्रकार किसी को भी सूचना की आवश्यकता खाना बनाने तथा बागवानी हेतु गृहसज्जा एवं गृहस्थी के आदि कार्यो हेतु आवश्यकता होती है इस प्रकार आधुनिक समय में सूचना समाज में सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से ऐसी सूचनाओं का अभिगम प्राप्त करना अत्यन्त सरल हो जाता है ।
7. **ग्रन्थालय एवं सूचना के क्षेत्र में प्रभाव –** पिछले प्राचीन समयावधि में ग्रन्थालय एवं सूचना केन्द्रो में टेक्नालाजी आधुनिक उपकरणों का उपयोग होने लगता है तथा इस प्रकार अनेको संख्या में ग्रन्थालय आजकल वर्तमान समय मे ई मेल फैक्स तथा वाडमयात्मक एवं आवाडमयात्मक डेटा देशो के आनलाइन

अभिगमन उपलब्ध कराते है इसके साथ ही साफ ग्रन्थालयो के गृहरक्षण कार्यो तथा कम्प्यूटर भी आवश्यक एवं उपादेय उपकरण बन गया है तथा इस तरह ग्रन्थालय नेटवर्किग ने भी ग्रन्थीय कला के दर्शन को बिल्कुल बदल दिया जाता है यह आधुनिक समय में सूचना समाज की देन है ।

उपसंहार – स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि प्रारम्भ में जहॉ मुदित अध्ययन सामग्री के अर्न्तगत ग्रन्थो पत्र पत्रिकाओं को संग्रहण किया जाता था एवं किया जा रहा है सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्रगति विकास फलस्वरूप आज वर्तमान समय प्रत्येक क्षेत्र में विशिष्टीकरण की आवश्कता का अनुभव किया जा रहा है आधुनिक समय मे सभी क्षेत्रों में सूचना की महत्तता बढने के कारण सूचना के प्रसारण एवं उपलब्ध की आवश्कता के फलस्वरूप नेटवर्किग की अवधारणा का विकास किया जा चुका है पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र भी कम्प्यूटर और संचार साधनों से अदूते नही रहे ।

ग्रन्थ सूची

1. पारीक , अवधेष कुमार(2013) भारत में डिजिटल ग्रन्थालय परिदृश्य ग्रन्थालय विज्ञान खण्ड विज्ञान खण्ड 44 पेज सं0 19–25
2. लाल सी (2012) डिजीटल ग्रंथालय ग्रन्थालय एवं सूचना प्रौद्योगिकी खण्ड– 15 पेज सं0 26–45
3. सिंह एसएन0(2009)इण्टरनेट एवं पुस्तकालय) ग्रंथालय विज्ञान – खण्ड 33(2)पेज सं0 52–60
4- Raj kumar(2011)Digital Library :advantages and disadvantages" retrived from www.sscarsh.org(dated 06.04.2014)
5- Shukla , N (2012) " Role of libraies I digital environment " .Research Digest Vol7(1)p.37-42
6- Jharotia , Anil Kumar (2012) . "Digital Libraies empowering knowledge of all role of digital Library " Available at : liberarydotcom . webs.com.researchs.htm.
7- Singh,D.K. and Nazim mohmmad " inpact of information teconology and Role of liberies " CALLIBER 2008 p.p.28-33
8- Miqueen , Shaista "Role of information teconology in Liberary " Indianb Journal of Librerary and information science . Vol 2(1) , p.15-17 .